an>

Title: Need to start medical education system integrating Allopathic and Ayurvedic systems of treatment and also promote Ayurveda in the country.

डॉ. बंशीलाल महतो (कोरबा)ः माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में भारत सरकार द्वारा आयुष मंत्रालय प्रारंभ किया गया, इसका मैं स्वागत करता हूं। भविष्य में निश्चित रूप से इसका भारतीय चिकित्सा के क्षेत्र में व्यापक असर दिखाई पड़ेगा। आयुर्वेद, ऋग्वेद और अथर्ववेद का ही हिस्सा है, तथा इसे पांचवा वेद माना जाता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति अत्यंत ही प्राचीन चिकित्सा पद्धति है, तथा यह पूर्णरूपेण वैज्ञानिक है। वर्तमान में ऐलोपैथिक चिकित्सा पद्धति का प्रचलन सर्वाधिक है, परंतु हमें आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार एवं प्रोत्साहन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में भी पं. मदन मोहन मालवीय जी ने ऐलोपैथिक और आयुर्वेदिक के सामंजस्य से एक पाठ्यक्रम तैयार किया था, जिसे समन्वित चिकित्सा प्रणाली का नाम दिया गया था, इसमें आयुर्वेदिक के साथ ऐलोपैथिक का भी समावेश था, परन्तु बाद में इस पाठ्यक्रम को बंद कर दिया गया था। मेरा मानना है कि इस पाठ्यक्रम को पुनः प्रारंभ करना चाहिए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सकों की भारी कमी को पूरा किया जा सके। जैसा कि सर्वविदित है कि एम.बी.बी.एस. चिकित्सक ग्रामीण क्षेत्रों में सेवायें देने से कतराते है, संकोच करते हैं तथा अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। अतः ऐसी स्थिति से निपटने के लिए 'समन्वित चिकित्सा प्रणाली' जैसे पाठ्यक्रमों की आवश्यकता है।

योग, जो आयुर्वेद/आयुष का ही एक भाग है, को विश्वव्यापी पहचान दिलाने में हमारी सरकार एवं मा. प्रधानमंत्री जी के प्रयास की सराहना की जानी चाहिए। 21 जून को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 'विश्व योग दिवस' घोषित किया जाना भारत की बहुत बड़ी उपलब्धि है। योग आज घर-घर में लोकप्रिय है, कई विद्यालयों ने योग को अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है। एलोपैथी से हमारा विरोध कतई नहीं है। एलोपैथी चिकित्सा पद्धति लगभग 400-500 वर्ष पुरानी है, जबकि आयुर्वेद सदियों प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति ऋषि मुनियों द्वारा प्रदत्त, सनातन चिकित्सा पद्धति है। यह भारत की पहचान है। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के प्रचार एंव प्रोत्साहन की आवश्यकता है और वर्तमान सरकार ही आयुर्वेद को योग की तरह विश्व में लोकप्रिय बना सकती है।